चलो कुछ बात करें

क्या ऑनलाइन पढ़ाई एक 'व्यथा' होती है

अमिताभ श्रीवास्तव

अगर एक ३/४ साल के बच्चे को ये पढ़ाया जाए कि मूली, प्याज़, या आलू ज़मीन के अंदर उगते हैं या ऊपर, तो बहुत से लोगों इस तरह का ज्ञान बाँटना फ़ालतू लगता होगा।

लेकिन मैं उनसे थोड़ा अलग विचार रखता हूँ क्योंकि जब मैं बचपन में चंदामामा में राजकुमार सिद्धार्थ (जो बाद में महात्मा बुद्ध बन गए) की कहानी पढ़ रहा था तो उसमें ये पढ़ कर बड़ी हँसी आयी थी कि जब उनसे पूछा गया कि चावल कहाँ से आते हैं तो उन्होंने कहा "थाली से"।

लेकिन बस।इससे ज़्यादा नहीं।इतने छोटे छोटे बच्चों को ये सिखाना की बैगन से या आलू से क्या क्या व्यंजन बन सकते हैं और उन्हें कैसे काटा जाता है तो बन्दर के हाथ में उस्तरा देने जैसा है।

क्या हम अपने नन्हें नौनिहालों से अब रसोई में जाकर गैस जलाने और चाय बनाने को कहेंगे क्योंकि लॉक्डाउन में उनके स्कूल बंद हैं?लेकिन ये हो रहा है और क्योंकि स्कूल वालों से पंगा लेने की किसी को (ki) हिम्मत नहीं है।

पता नहीं वो हमारे बच्चे को क्या रैंकिंग दे दें?क्या पता हमारी बेटी,पोती या नाती को श्रीमती गुप्ता या श्रीमती मिश्रा की लड़की से कम नम्बर मिल गए तो?उसकी कितनी इन्सल्ट हो जायेगी।

बात में दम है।हमारे समय तो मैट्रिक के बाद के भी पिताजी सबके सामने दो झापड़ भी लगा देते थे और रोने पर एक और पड़ता था।पर ये बच्चे।बाप रे बाप।उनकी सहेलियों या दोस्तों के सामने किसी बात के लिए मना भी कर दिया तो बग़ावत।

ख़ैर, बात हो रही है ऑनलाइन पढ़ाई की, जो करोना के कारण पिछले लगभग दो सालों से छोटे बच्चों के लिए जी का जंजाल बनी हुई है।

५ साल से छोटे बच्चे जो पिछले मार्च से आजतक स्कूल नहीं गए,जिन्होंने अपनी टीचर की शक्ल तक नहीं देखी,अपनी क्लास के बच्चों से नहीं मिले, ये उम्मीद करना कि वो टीचर को एक फ़ोन,या लैपटॉप पर देख कर उनके हर सवाल का सही सही जवाब देंगे तो इस सदी का सबसे बड़ा अत्याचार होगा।

मैं कुछ बच्चों को जानता हूँ जो ऑनलाइन पढ़ाई की वजह से अपना आत्म-विश्वास पूरी तरह खो चुके हैं।कुछ बच्चे जिन्होंने अभी अभी बोलना शुरू किया था अब तुतलाने लगे हैं और ४० मिनट स्क्रीन के सामने एक अनजान टीचर के सामने बैठने को राज़ी नहीं हैं।

ऐसा नहीं है ये सिर्फ़ बच्चों के लिए दुःख भरे दिन हैं।टीचरों की हालत तो और बुरी है।अगर उन्होंने बच्चे को संतरा दिखा कर पूछा ये क्या है और वो बड़े विश्वास से कह देता है आलू, तो वो ग़ुस्से में चिल्ला भी नहीं सकती और उसे अपने पूरे मेकअप की मर्यादा रखते हुए मुस्कुरा कर कहना पड़ता है "ग़लत जवाब।बेटा ये संतरा है,ऑरेंज, यू नो"।

वो भी मज़बूर हैं।उनकी सेलरी वैसे ही कम हो गयी है और अगर ये ऑनलाइन क्लास नहीं हुई तो वो भी ख़त्म।इसलिए वो भी छोटे छोटे बच्चों से रोज़ ४० मिनट तक उनसे बात करने के नए नए फ़ॉरमूले इजाद करती रहती हैं।अभी डेल्टा गया नहीं और आमिक्रॉन आ गया।जब तक बच्चों की वैक्सीन नहीं आती माँ बाप अपने नौनिहालों को स्कूल भेजने को तैयार नहीं।

दिक़्क़त ये है की ऑनलाइन पढ़ाई से सिर्फ़ छोटे बच्चों का ही नहीं बड़ी क्लास के बच्चों को भी कोई विशेष फ़ायदा नहीं हो रहा है।उनकी दिन में तीन या चार बार क्लास तो होती हैं लेकिन ये सिर्फ़ एकतरफ़ा क्लास होती हैं जहाँ बच्चे कहीं भी बैठ कर या सोते हुए भी अपनी क्लास अटेंड कर लेते हैं।

पता नहीं कि स्कूल वालों ने अपने आप ये फ़ैसला किया या शिक्षा मंत्रालय के आदेश पर। ऑनलाइन क्लासें कभी दिन को होती हैं कभी रात के ८ बजे पर इससे छात्र और टीचर दोनों परेशान हैं।

इस वर्ष की बोर्ड परीक्षा के नतीजों से कॉलेज वाले परेशान हैं क्योंकि ये पिछले वर्ष से कई प्रतिशत अच्छे हैं। और ऑनलाइन परीक्षा में दसवीं या बारहवीं के समझदार बच्चे क्या-क्या कर सकते हैं ये सब जानते हैं।

अब कई राज्य स्कूल खोलने की घोषणा कर चुके हैं पर आमिक्रॉन के ख़तरे को देखते हुए अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने से इनकार कर रहे हैं।

"जान सलामत रही तो अगले साल पढ़ लेंगे।एक साल ड्रॉप करने में हमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता" बच्चों के माता-पिता, नानी-नाना,दादी-दादा,चाची-चाचा,मौसी-मौसा सभी सहमत हैं।

उधर सरकार सारी परीक्षाएँ स्कूल में जा कर लेने को आमादा है।बल्कि उसने बोर्ड की परीक्षा को साल में एक के बजाए दो बार कर दिया है।

अब कौन किसको राय दे रहा है पता नहीं लेकिन आफ़त बच्चों की ही है ये तो पक्का है।